श्री साईं महात्म्य - हिंदी काव्य

आध्यात्मिक एवं सांसारिक प्रसन्नतादायक काव्य

(श्री साईं सच्चरित्र पर आधारित)

(हिंदी भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

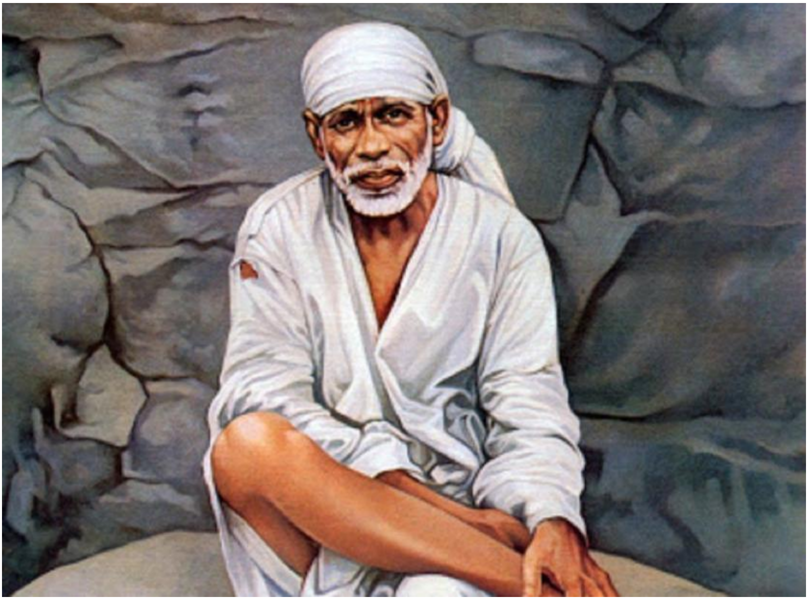

श्रध्दा
सबुरी

श्री साईं महात्म्य - हिंदी काव्य

आध्यात्मिक एवं सांसारिक प्रसन्नतादायक काव्य

(श्री साईं सच्चरित्र पर आधारित)

(हिंदी भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

वेबसाइट (Website): https://shriramkatha.org

ई-मेल (Email): srkperth@outlook.com

मोबाइल (Mobile): **+61 410 641 543**

SHRI SAI MAHATMAY HINDI KAVYA
(HINDI)

ISBN: 978-1-7648041-8-9

Author / All rights Reserved

© Author: Dr. Yatendra Sharma

1st Edition: June 2022

E-Book

Published by: Shri Ram Katha Sansthan

35 Mayena Retreat, Hillarys
W.A. 6025, AUSTRALIA
Telephone: +61 8 94011543
Email: srkperth@outlook.com

अस्वीकरण

इस काव्य की सामग्री जनहित एवं सामान्य ज्ञान के लिए प्रदान की गई है| हमारा तद्भाव पाठक को कोई परामर्श देने का नहीं है| इस काव्य की सामग्री किसी भी प्रकार से विशिष्ट परामर्श का विकल्प नहीं है| आपको इस ज्ञान के आधार पर कोई भी निर्णय लेने से पहले प्रासंगिक निपुण या विशेषज्ञ का परामर्श प्राप्त कर लेना चाहिए|

इस काव्य के रचयिता, प्रकाशक और उनका कोई प्रतिनिधि किसी भी विषय में इस पुस्तक से सम्बंधित कोई प्रत्याभूति नहीं लेते| इस काव्य का पठन-पाठन-श्रवण पाठक स्वयं के संज्ञान से दायित्व ले कर ही करें|

यद्यपि हमने इस काव्य में सटीक ज्ञान देने का पूर्ण प्रयास किया है लेकिन किसी भी प्रकार कोई त्रुटि अथवा अकृता रह गई हो तो उसके लिए रचयिता एवं प्रकाशक क्षमा प्रार्थी हैं और इसके परिणाम स्वरूप किसी विधि, सामाजिक, धार्मिक, इत्यादि का दायित्व नहीं लेते|

विषय-सूची

अस्वीकरण 5
समर्पण 7
निवेदन 9
श्री साईं महात्म्य काव्य रचना हेतु 10
भगवान् श्री साईं - अद्भुत अवतार 14
कष्ट एवं दुर्भाग्य निवारण 25
संतति प्रदान 34
फलश्रुति (पठन/ श्रवण साईं महात्म्य) 39
शिर्डी साईं बाबा - संक्षिप्त जीवन परिचय 44
कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा 50

समर्पण

ॐ श्री साईं नमो नमः । ॐ जय जय श्री साईं नमो नमः ।
सद्गुरु श्री साईं नमो नमः ।

परम पूज्य श्री गुरुदेव साईं को सादर समर्पित ।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति |
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ||
(श्रीमद्भागवद्गीता ९-२६)

यदि कोई प्रेम तथा भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ |

निवेदन

भारत एवं समस्त विश्व में शिर्डी साईं बाबा कोई अनजाना नाम नहीं। वह एक महान संत थे। नश्वर वस्तुओं का उन्हें कोई मोह नहीं था। उनका मुख्य उद्देश्य भक्तों को आत्मिक अनुभूति कराना था। वह लोगो को प्रेम, दया, मदद, समाज कल्याण, संतोष, आंतरिक शांति, भगवद भक्ति एवं गुरु भक्ति का पाठ पढ़ाते थे।

उनकी शिक्षाओं में से प्रमुख धार्मिक भेदभाव नहीं करना है। साईं बाबा अपने भक्तों को हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों का पाठ पढ़ाते थे। वह शिर्डी ग्राम में एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में रहते थे जिसे वह द्वारका माई नाम से पुकारते थे।

श्री हेमाडपंत दाभोलकर जी ने शिर्डी साईं बाबा का जीवन चरित्र चित्रण अपनी पुस्तक 'श्री साईं सच्चरित्र' में बड़े ही सुचारू रूप से किया है। यह पुस्तिका 'श्री साईं महात्म्य काव्य' उसी पर आधारित शिर्डी साईं बाबा के महात्म्य में कुछ काव्य शब्द हैं। शिर्डी साईं बाबा का महात्म्य लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। महान संतों का चरित्र चित्रण हम जैसे साधारण व्यक्ति कहाँ कर सकते हैं, फिर भी यह उनके प्रति हमारा सम्मान और आदर भाव है। आशा है हमारे भाव आपको अवश्य ही प्रिय लगेंगे।

आपका अपना, प्रभु के चरणों में,

डॉ यतेंद्र शर्मा
अध्यक्ष एवं संस्थापक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ (पंजीकृत)
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

श्री साईं महात्म्य काव्य रचना हेतु

<u>श्री श्यामा उवाच</u>

की श्यामा करबद्ध प्रार्थना । सुनो साईं मेरी आराधना ।।
दो हेमांडपंत यह प्रचोदना । करें साईं-सच्चरित्र की रचना ।।(१)

<u>श्री श्यामा उवाच</u>

भावार्थ: *श्री श्यामा जी कर बद्ध प्रार्थना करते हुए (भगवान्) श्री साईं से बोले, 'हे साईं, आप हेमांडपंत जी को साईं सच्चरित्र लेखन की आज्ञा दीजिए।'*

जन मंगल हो तब मेरे स्वामी । पड़े पग साईं तब वह अनुगामी ।।
बोले यह वचन तब अन्तर्यामी । छोड़ो मम पग तुम हे सुगामी ।।(२)

भावार्थ: *हे स्वामी, इससे जन मंगल होगा। वह भक्त (श्री श्यामा जी) साईं के चरणों में लोट गए। तब अन्तर्यामी (श्री साईं) ने उनको उठाया और बोले, 'हे भद्र, मेरे चरण छोड़ो।'*

<u>भगवान् श्री साईं उवाच</u>

सुन श्यामा तेरे जन हित वचन । हुआ हृदय अति हर्ष उत्पन्न ।।
करें हेमांडपंत कथा लेखन । समझो यह तुम मेरा प्रचोदन ।।(३)

भावार्थ: *भगवान् श्री साईं बोले, 'हे श्यामा, तेरे जन कल्याण करने वाले वचन सुन हमारा हृदय अत्यंत हर्षित हुआ। हेमान्डपंत कथा लिखें, इसे तुम मेरी आज्ञा समझो।'*

जो पढ़े सुने यह श्री सच्चरित्र । हो अवश्य उसका हिय पवित्र ।।
करूँगा भला मैं बनकर मित्र । होगा सुगन्धित जग जैसे इत्र ।।(४)

भावार्थ: *जो भी मेरे सच्चरित्र को पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसका हृदय अवश्य पवित्र होगा। मैं उसका मित्र बन कर उसका हित करूंगा। उसकी सुगन्धि विश्व में इत्र समान फैलेगी।*

श्रद्धा सों सुमिरें साईं नाम । होंगे रिपु भी मीत समान ।।
होगी वृद्धि बुद्धि और ज्ञान । हों नर नारी सब संत समान ।।(५)

भावार्थः *साईं का नाम श्रद्धा से स्मरण करने से शत्रु भी मित्र बन जाएंगे। बुद्धि और ज्ञान में वृद्धि होगी। सभी नर एवं नारी संत समान हो जाएंगे।*

पाए इहलोक धन धान्य मान । परलोक पाए वह धाम भगवान् ।।
हो जीवन उसका प्रकाशमान । पाएं संतान भू अति सम्मान ।।(६)

भावार्थः *ऐसा प्राणी इहलोक में धन-धान्य एवं सम्मान पाएगा। वह परलोक में (मृत्यु पश्चात) प्रभु का धाम पाएगा (अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करेगा)। उसका जीवन उज्ज्वलित होगा। उसकी संतानें पृथ्वी लोक पर अत्यंत सम्मान प्राप्त करेंगी।*

छू न सके उसे मोह कूटोपाया ।हो अति आनंदित उसकी काया ।।
रहे दूर छल कपट काम माया। हों दूर कष्ट उस भक्त अमृताया ।।(७)

भावार्थः *मोह और माया उसको स्पर्श भी नहीं कर सकते। वह समस्त सुखों का भोग करेगा। छल, कपट और दुःख से दूर रहेगा। उस प्रभु के भक्त को कष्टों से छुटकारा मिलेगा।*

होगी उसकी भक्ति श्री हरि में । सहज तर जाए वह कलियुग में ।।
पढ़े यह महात्म्य किसी समय में ।सचेत स्वप्न या ध्यान दशा में ।।(८)

भावार्थः *ऐसे प्राणी की प्रभु में भक्ति जाग्रत होगी। कलियुग में सहजता से तर जाएगा (अर्थात कलियुग का प्रभाव नहीं व्यापेगा)। इस महात्म्य को किसी भी समय और अवस्था - सचेत, स्वप्न अथवा ध्यान, में पढ़ा जा सकता है।*

साथ में हों सब कुटुंब मित्र । लें आनंद श्रवण सभी एकत्र ।।
करें साईं अर्पण पुष्प व् पत्र । करें श्रवण पठन किसी सत्र ।।(९)

भावार्थः *'मित्र एवं सभी परिवार के साथ एकत्र होकर (साईं महात्म्य के पठन एवं सुनने का) आनंद लें। साईं को पुष्प और पत्र अर्पण कर किसी भी समय इसका श्रवण तथा पठन करे।*

सुनी मधुर साईं की वाणी । गदगद भए सब उपस्थित प्राणी ।।
करबद्ध कहें तब हे चक्रपाणी । हैं हम भेड़ साईंदेव चराणी ।।(१०)

भावार्थः *साईं के मधुर वचन सुनकर सभी उपस्थित प्राणी गदगद हो गए। सभी हाथ जोड़कर कहने लगे, 'हे भगवन साईं, हम आप की भेड़ हैं, और आप हमारे चरवाहे हैं।'*

श्री हेमांडपंत उवाच

पड़े हेमांडपंत तब साईं चरन । त्राहि त्राहि करो रक्षा भगवन ।।
भर नैन अश्रु बोले यह वचन । हे साईं आपकी लीला गहन ।।(११)

भावार्थः *तब, 'त्राहि त्राहि, हे भगवन रक्षा करो', कहते हुए हेमांडपंत उनके चरणों में गिर पड़े। नैनों में अश्रु भरकर वह बोले, 'हे साईं, आपकी लीला अत्यंत गूढ़ है।'*

प्रार्थना

प्रभु साईं तुम हरि अवतार । हैं शोकमोचन जग प्राणाधार ।।
है श्रद्धा हमरे हिय आगार । दो हरि सबूरी तुम प्रतिकार ।। (१२)

भावार्थः *हे साईं, आप प्रभु के अवतार हैं। आप जग के शोक दूर करने वाले (हमारे प्राणों के) आधार हैं। हमारे हृदय में अनन्य श्रद्धा है। आप हमें धैर्य और संतोष प्रदान कीजिए।*

करो स्वीकार साईं तुम अर्पन । करें नैवेद्य पंचामृत ढौकन ।।
सता रहे हमें लोकायत जन । हैं हम अबोध नर नारी भूजन ।।(१३)

भावार्थः *हे साईं, हम आपको नैवैद्य एवं पंचामृत समर्पित कर रहे हैं, हमारा अर्पण आप स्वीकार कीजिए। हे प्रभु, हम असहाय प्राणी हैं। हमें इस संसार के पाखंडी लोग सता रहे हैं।*

गाएं हम सब यह साईं महात्म्य । है तन मन धन स्वामी में तन्मय ।।
दो हमें तुम सुख शान्ति आत्मय । बनें हम सब अनवरत प्रज्ञामय ।। (१४)

भावार्थः *हे साईं, हम तन, मन, धन एकाग्र कर इस साईं महात्म्य का गान कर रहे हैं। हे प्रभु, हमें सुख शांति प्रदान कीजिए ताकि हम निरंतर ज्ञान प्राप्त कर सकें।*

भटक रहे साईं हम इस जग में । जन्म जन्मांतर के कर्म फल में ।।
लगे मन सदा समाज विकास में । हो निःस्वार्थ भावना हिय में ।। (१५)

भावार्थः *हे साईं, हम इस जगत में अपने जन्म जन्मांतर के कर्म फल के अनुसार भटक रहे हैं। (हे साईं, हमें प्रेरणा दो) हम निःस्वार्थ भाव से समुदाय के उत्थान के लिए कार्य करें।*

हो हृदय हमारे संतोष शान्ति । ना व्यापे कभी कोई भ्रान्ति ।।
हो मान जग और फैले कान्ति । भर जाए हृदय भक्ति क्रान्ति ।। (१६)

भावार्थः *(हे साईं) हमारे मन में सदैव संतोष एवं शांति व्याप्त रहे। हमें कभी कोई संशय न हो। विश्व में हमारा सम्मान हो और यश फैले। हमारा हृदय भक्ति की क्रान्ति से भर जाए (अर्थात हम प्रभु की भक्ति में डूब जाएं)।*

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

भगवान् श्री साईं - अद्भुत अवतार

<u>श्री हेमांडपंत उवाच</u>

श्यामा तुम हो साईं भक्त अनंत । बोले प्रमत श्री हेमांडपंत ।।
है साईं कृपा हम सब जीवंत । पर तुम अति प्रिय प्रभु नियंत ।।(१७)

भावार्थः *बुद्धिमान श्री हेमांडपंत बोले, 'हे श्यामा, आप तो साईं के अनन्य भक्त हैं। हम सभी प्राणीओं पर (यद्यपि) साईं की कृपा है, (परन्तु) आप तो प्रभु के अत्यंत प्रिय हो।'*

कहो तथ्य हैं कौन यह साईं । जो जन्मे धरती देव की नाईं ।।
क्या कारण लिए जन्म गोसाईं । तद् पूछत प्रश्न आँख भर आईं ।।(१८)

भावार्थः *(हे श्यामा जी) आप हमें बतलाइए कि यह साईं कौन हो जिन्होंने इस पृथ्वी पर देव स्वरुप में जन्म लिया है? इन प्रभु के अवतार का क्या कारण है?' यह प्रश्न पूछते हुए उनके नेत्रों में (प्रेम का) जल छलक गया।*

<u>श्री श्यामा उवाच</u>

हो पंत जी आप बड़े ही ज्ञाता । हूँ मैं अनपढ़ मूरख अज्ञाता ।।
है मति लघु पर बड़ी है बाता । छोटे मुँह न ज्ञान कभी भाता ।।(१९)

भावार्थः *(श्यामा जी बोले) हे हेमांडपंत जी, आप तो बड़े ज्ञानी हैं। मैं तो एक अनपढ़ मूर्ख अज्ञानी हूँ। मेरी बुद्धि अति लघु और यह बात बहुत बड़ी है। छोटे मुँह से बड़ी बातें करना शोभा नहीं देता।*

अतैव कहूँ मैं साईं प्रेरण । सुनो हिय धार मेरा यह विवरण ।।
हैं साईं स्वयं श्री शिव सगुण । जन्मे धरा हेतु जन दुःख हरण ।।(२०)

भावार्थः *फिर भी मैं साईं की प्रेरणा से कहता हूँ। मेरी इस बात को हृदय से सुनो। साईं स्वयं महादेव के सगुण अवतार हैं जो इस भूमि पर प्राणियों के दुःख दूर करने के लिए अवतरित हुए हैं।*

हैं कहे गोस्वामी रामचरित । जब जब होए धर्म जग विलुप्त ।।
हैं तब प्रभु स्वयं भू अवतरित । अथवा संत स्वरूप जन्म संहृत ।।(२१)

भावार्थ: *गोस्वामी (तुलसीदास जी) ने श्री रामचरितमानस में लिखा है कि जब जब धर्म की हानि होती है, तब तब या तो प्रभु स्वयं अपने रूप में अवतार लेते हैं अथवा किसी संत के रूप में अवतरित होते हैं।*

धरें अवतार तब वधें नर अधर्म । दें संत रूप में ज्ञान सुधर्म ।।
हरें संत रोग नयन सुरमा सम । करें संकट निर्मूल वह सुकर्म ।।(२२)

भावार्थ: *प्रभु जब (स्वयं पूर्ण रूप में) अवतार लेते हैं तो अधर्मियों का वध करते हैं। संत रूप में जन्म लेकर उन्हें धर्म ज्ञान देते हैं। जिस प्रकार सुरमा नेत्र के रोग को हर लेता है, उसी प्रकार संत सभी धर्मीयों के संकट हर लेते हैं।*

ऐसा हुआ एक धरा अवतार । आए स्वयं शिव धर साईं आकार ।।
है लक्ष्य करें सब प्राणी उद्धार । बना शिर्डी तीरथ इस संसार ।।(२३)

भावार्थ: *(भगवान्) शिव साईं का रूप धरकर इस पृथ्वी पर अवतरित हुए। उनका लक्ष्य हमारा उद्धार करना है। (साईं के शिर्डी निवास से) शिर्डी इस विश्व का एक तीर्थ बन गया।*

धैर्य शांति साईं के आभरण । रहें सदैव वह साधना रमण ।।
करें सम सिद्ध साधक आचरण । हैं साईं प्रतीक श्रेष्ठ संतगण ।।(२४)

भावार्थ: *शांति एवं धैर्य साईं के आभूषण हैं। वह सदैव साधना में लीन रहते हैं। उनका आचरण एक सिद्धि प्राप्त साधक के समान है। साईं श्रेष्ठ संत के प्रतीक हैं।*

पग धोवन है माँ गंगा जल सम । पीने से मिले फल स्नान संगम ।।
पी चरणामृत हों नर सम देवम । हो भूजन सुमंगल शुभ अचरम ।।(२५)

भावार्थ: *उनका पग धोवन माँ गंगा जल के समान है। यह त्रिवेणी में स्नान करने जैसा (शुभ) फल देता है। उनके चरणामृत पान करने से प्राणी देव स्वरुप (पवित्र) हो जाता है। प्राणी मंगलता, श्रेष्ठता एवं शुभता को प्राप्त होता है।*

करें साईं सत इच्छा पूर्ति । पाएं भक्त सब कष्टों से मुक्ति ।।
साईं लीला सुन हो हिय तृप्ति । ईश्वर प्रेम में बढे आसक्ति ।।(२६)

भावार्थ: *(इस महात्म्य के पठन /श्रवण से भक्तों की) सभी शुद्ध इच्छाओं की पूर्ती होती है, और उनको सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है। श्री साईं लीला हृदय को प्रसन्न करने वाली है और ईश्वर में श्रद्धा बढ़ाती है।*

पाए मन परम सुख और शान्ति । पाएं मरण भूजन मोक्ष सद्गति ।।
सुनो एक हरि साईं की कृति । श्रवण करे वह सब पाप निवृति ।।(२७)

भावार्थ: *(साई लीला) हृदय को परम सुख और शांति देने वाली एवं प्राणियों को मोक्ष और सद्गति देने वाली होती है। सब पापों को हरने वाली साईं की एक लीला का श्रवण करो।*

थे दास गनु साईं परम भक्त । करें विचार प्रयाग प्रवृत्त ।।
है त्रिवेणी स्थल अति धर्मवत् ।संगम स्नान सों करें हरि मुक्त ।।(२८)

भावार्थ: *दास गणु जी साईं के परम भक्त थे। उन्होंने प्रयाग जाने का विचार किया। (उन्होंने सोचा) त्रिवेणी संगम अत्यंत पवित्र है। वहां जा कर स्नान करूँ ताकि प्रभु मुक्ति दें।*

है आवश्यक गुरु की अनुमति । आए वह शिर्डी लेने आज्ञाप्ति ।।
किए पग स्पर्श साईं अधिपति । दो गुरुदेव मुझे उचित मति ।।(२९)

भावार्थ: *(इस प्रकार की धार्मिक प्रक्रियाओं के लिए) गुरु की आज्ञा आवश्यक है, (यह विचारकर) वह शिर्डी आज्ञा लेने आए। (शिर्डी पहुंच कर) उन्होंने गुरु साईं के चरण स्पर्श किए, और गुरुदेव से उचित बुद्धि देने को कहा।*

बोले मधुर वचन गुरु साईं । हो सोच सदा रैदास की नाईं ।।
मन चंगा और हिय गोसाईं । बहें कठोती पावन गंगा माँईं ।। (३०)

भावार्थ: *तब गुरु साईं मधुर वचन बोले, '(हे दास गनु) सदैव संत रैदास की भांति सोचना चाहिए। अगर हृदय पवित्र है और उसमें प्रभु का वास है तो कठोती में ही गंगा माँ निवास करती हैं।*

नहीं नितांत जाना त्रिवेणी । शिर्डी में ही संगम और वेणी ।।
पड़े तब गणु गुरु साईं चरणी । बह रहीं पग यमु-गंग जलवेणी ।। (३१)

भावार्थ: *(साई बोले) त्रिवेणी जाना कोई आवश्यक नहीं है। (हमारे लिए) यहीं शिर्डी में ही संगम (प्रयाग) और पवित्र नदी (दोनों) हैं। (साईं के यह वचन सुनकर) तब दास गनु जी ने जैसे ही साईं के चरणों को स्पर्श किया, (उनके चरणों से) गंगा और यमुना की धारा बह रहीं थीं।*

जब देखा चमत्कार साईं का । हुआ हिय अचंभित सभी का ।।
पड़ पग लें आशीष प्रभु का । करें जयकार ईश्वर रूप का ।। (३२)

भावार्थ: *साई का यह चमत्कार देख सब के हृदय अचंभित हो गए। सभी साईं का आशीर्वाद लेने उनके चरणों पर लोट गए। सभी ईश्वर रूप (साईं) की जय जयकार कर रहे हैं।*

पड़ साईं चरण करें प्रार्थना । करो पूर्ण प्रभु हमारी कामना ।।
निकली तब गनु मुख से रचना । रहम गुरु साईं तुम करना ।। (३३)

भावार्थ: *सभी साईं के चरणों पर गिर प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु हमारी इच्छाओं को पूर्ण करो। तभी दास गनु जी के मुख से (कविता रूपी) रचना निकल पड़ी, 'हे गुरु साईं, तुम कृपा करना।'*

हैं हम मूरख प्रभु तुम ज्ञानी । राह दिखाओ हरि अंधा जानी ।।
हम भूजन अभागी अभिमानी । हैं हम असत अविश्वस्त अज्ञानी ।। (३४)

भावार्थः *(दास गनु जी प्रार्थना करते हैं) हे प्रभु, हम मूर्ख हैं, आप ज्ञानी हैं। हमें अंधा समझते हुए हमारा मार्ग दर्शन करें। हम पृथ्वी वासी तो अभिमानी, अपवित्र, संदिग्ध एवं अज्ञानी हैं।*

प्रभु साईं हैं परे सब धर्म । स्वयं ही सच्चिदानंद सर्वधर्म ।।
हैं नहीं वह अनुचर कोई धर्म । ना कोई जाति सम वर्णकर्म ।। (३५)

भावार्थः *साईं सब धर्म से परे स्वयं ही सब धर्म सच्चिदानंद हैं। वह किसी धर्म के अनुयायी नहीं हैं। उनकी वर्णकर्म (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र) पर आधारित कोई जाति नहीं है।*

त्यागे साईं सब इन्द्रिय सुख । हैं अहम् से वह सदैव विमुख ।।
है सदैव ईश्वर मालिक मुख । निर्मूल करें वह सभी के दुःख ।। (३६)

भावार्थः *सभी इन्द्रिय सुखों का त्याग कर साईं अहंकार से विमुख हैं। 'ईश्वर मालिक' सदैव उनके मुख में रहता है ('ईश्वर ही मालिक है का वह सदैव उच्चारण करते रहते हैं)। सभी के दुःख दूर करने में वह तत्पर रहते हैं।*

हैं मूलतः साईं निराकार । लियो अवतार भू नर रूपाकार ।।
हेतु जन्म प्रसार प्रेम संसार । है अद्भुत साईं का अवतार ।। (३७)

भावार्थः *यद्यपि साईं मूलतः निराकार हैं लेकिन उन्होंने पृथ्वी पर नर रूप में प्रेम का संचार करने हेतु जन्म लिया है। यह साईं का अवतार अत्यंत अद्भुत है।*

हो वेद या अन्य ग्रन्थ धर्मवत । साईं सभी ग्रंथों के प्रमत ।।
दें ज्ञान सदैव अपने सब भक्त । समझाएं आशय पुस्तक भगवत ।। (३८)

भावार्थः *वेद या अन्य सभी पवित्र ग्रंथों के साईं ज्ञानी हैं। वह सदैव अपने भक्तों को इनका ज्ञान देते हुए इन भगवद पुस्तकों का आशय समझाते हैं।*

ईशावास्य उपनिषद् पावन ।है ग्रन्थ गूढ़ विषय दर्शन ।।
चाहें दास गनु करें विवेचन ।था कठिन परन्तु पर्यालोचन ।।(३९)

भावार्थ: *पवित्र ईशावास्य उपनिषद् एक गूढ़ विषय का दर्शन ग्रन्थ है। दास गणु जी इसका विवेचन करना चाहते थे परन्तु इसका मार्मिक समीक्षण करना अत्यंत कठिन था|*

किए परामर्श वह अनेक पंडित । न कर सका उन्हें कोई संतुष्ट ।।
तब दास गनु किए हिय विचिंत । करें साईं संदेह दूर किंचित ।।(४०)

भावार्थ: *उन्होंने सभी पंडितों (ज्ञानीओं) से परामर्श किया, परन्तु वह संतुष्ट नहीं हुए। तब उन्होंने हृदय में ऐसा विचार किया कि उनके सभी संदेहों का निवारण साईं द्वारा संभव है।*

आए तब शिर्डी श्री गणु दास ।करो निर्मूल संशय अमिताश ।।
बोले तब साईं अति मधुर भाष ।जाओ विले पार्ले काका वास ।।(४१)

भावार्थ: *वह दास गणु जी शिर्डी आए और उनसे संशय दूर करने की प्रार्थना की। तब मधुर वचन में साईं बोले, 'तुम विले पार्ले (मुंबई का एक मोहल्ला) काका के निवास जाओ।'*

चेटी श्री दीक्षित काका की ।सुलझाएगी गुत्थी ग्रन्थ की ।।
है क्या तथ्य इस साईं धीति की ।था परे समझ सभी भक्तों की ।।(४२)

भावार्थ: *'श्री काका दीक्षित की नौकरानी ग्रन्थ के सभी संशय दूर करेगी।' साईं के वचनों की यथार्थता क्या है, यह सभी भक्तों की समझ से बाहर था।*

नहीं समझा रहस्य कोई पंडित ।कैसे समझाएगी एक अशिक्षित ।।
साईं तो हैं श्री हरि नियंत ।न हों वचन कभी असत्य अनंत ।।(४३)

भावार्थ: *कोई पंडित रहस्य नहीं समझ सका, तो एक अशिक्षित नौकरानी कैसे समझा सकती है? (लेकिन दास गणु जी ने सोचा) साईं तो श्री प्रभु हैं। हरि के वचन कभी असत्य नहीं हो सकते।*

ऐसा गनु ने किया हृदय विचार । आए विले पार्ले काका आगार ।।
भजन सुना अहन शयनागार ।है कौन यह मधुर गाथाकार ।।(४४)

भावार्थ: *इस प्रकार हृदय में सोचते हुए दास गणु जी काका (दीक्षित) जी के घर (विले पार्ले) गए। (वहां) प्रातः अपने शयन कक्ष में भजन सुना। यह मधुर गायक कौन है? (यह जानने की उनकी उत्सुकता हुई)।*

कौतुक हूँ वह गए उस स्थान ।थी बाई जहां गा रहीं गान ।।
मांज रही थी वहां पात्रान ।थीं वह मधुर भजन संस्तवान ।।(४५)

भावार्थ: *अचंभित हो वह उस स्थान को गए (जहां से मधुर गान का स्वर आ रहा था) जहां नौकरानी गाना (भजन) गा रही थी। (उन्होंने देखा) वहां वह बर्तन मांज रही थी। वह अति मधुर भजन गायक थी|*

तन पर पहने कपड़ा विदीर्ण ।दास गनु हृदय तब हुआ जीर्ण ।।
पूछा काका है कौन यह क्षीण ।है लघु बहन मम चेटी प्रवीण ।।(४६)

भावार्थ: *तन पर फटे पुराने कपडे थे। यह देखकर दास गणु जी का हृदय दुःखी हो गया। उन्होंने काका (दीक्षित) से पूछा यह निर्धन कौन है? (तब उन्होंने बतलाया), 'हे संत, यह मेरी नौकरानी की छोटी बहन है।'*

कृपया दो इसे एक नया अद्धा । मेरी प्रार्थना है कर बद्धा ।।
देख दास गनु हिय अति श्रद्धा । काका दीन्हें तब साड़ी अद्धा ।।(४७)

भावार्थ: *(दास गनु जी काका जी से बोले) मेरी आपसे कर बद्ध प्रार्थना है कि इसे आप एक अद्धा (छोटी साड़ी) दे दीजिए। दास गनु जी के हृदय में (निर्धन नौकरानी के प्रति) श्रद्धा देखते हुए, काका (दीक्षित) ने उसे नया साड़ी अद्धा दे दिया।*

पा साड़ी उसने पाया संसार । था उसका हिय ले रहा हलकार ।।
आई पहन वह दिन अग्रिम वार । थी प्रसन्न वह धनवान प्रकार ।।(४८)

भावार्थः *(नई) साड़ी पा जैसे उसे संसार मिल गया। उसका हृदय मग्न हो गया। दूसरे दिन उसने वह साड़ी पहनी। एक धनवान की तरह अत्यंत प्रसन्न लग रही थी।*

थी वह मग्न खेल कूद उछलना ।देती धन्यवाद दयालु अन्ना ।।
अगले दिन फिर पूर्व अपवरना ।चीथड़ वस्त्र ही तन पर धारना ।।(४९)

भावार्थः *खेलती कूदती अति प्रसन्न हो वह काका (दीक्षित) का आभार व्यक्त कर रही थी। अगले दिन (जब वह काम पर आई) उसने वही पुराने चीथड़े कपड़े धारण किए हुए थे।*

था नहीं कोई भाव दुःख वदन ।थी प्रसन्न जैसे नई अपवरन ।।
हुआ गनु हृदय तब संसर्पन।हुआ ग्रन्थ गूढ़ मर्म तब वेदन ।।(५०)

भावार्थः *उसके चेहरे पर कोई दुःख का भाव नहीं था| वह प्रसन्न थी जैसे नई साड़ी पहनी हो| दास गनु जी का हृदय तब चकित हुआ। तब उन्हें ग्रन्थ के गूढ़ रहस्य की अनुभूति हुई।*

दुःख सुख तो है मनोभावन । नहीं सम्बन्ध जन धनी या निर्धन ।।
रहता सुखी केवल वह भूजन । समझे दिए प्रभु पर्याप्त साधन ।।(५१)

भावार्थः *दुःख सुख तो मन की भावना है। प्राणी के धनी अथवा निर्धन होने से इसका सम्बन्ध नहीं है। केवल वही प्राणी सुखी है जिसने यह समझ लिया कि प्रभु ने उसे पर्याप्त दिया है (संतुष्टि की भावना जिसके अंदर है)।*

रहे प्रसन्न जन जो दिए भगवन ।हो नहीं लोभ लालच कभी मन ।।
दे ज्ञान यही ईशावास्य भूजन ।रहो संतुष्ट जो पास द्रव्य धन ।।(५२)

भावार्थ: *जो प्रभु ने दे दिया है, उसी में प्रसन्न रहते हुए लोभ, लालच कभी मन में नहीं लाओ, यही ज्ञान ईशावास्य ने प्राणियों को दिया है। जो पास में धनादि है उसमें संतुष्ट रहो।*

तब गनु किए साईं अधिमूल्यन। साईं बिन कौन करे निस्तारन ।।
करें उन्हें वह बार बार नमन । स्मरण कृपा हो हृदय प्रसन्न ।।(५३)

भावार्थ: *तब (दास) गनु जी ने साईं की प्रशंसा की। साईं के अतिरिक्त हमें कौन उबार सकता है? वह उन्हें बार बार नमस्कार करते हैं तथा उनकी कृपा का हृदय में स्मरण कर अति प्रसन्न होते हैं।*

हैं सभी धर्म साईं के मानन । हिन्दू सिख इस्लाम क्रिस्चियन ।।
मानें हर उत्सव साईं सदृशन । हो कथक धर्म हिन्दू या यवन ।।(५४)

भावार्थ: *हिन्दू, सिख, ईसाई अथवा इस्लाम, साईं सभी धर्मों का आदर करते हैं। उनके लिए सभी पर्व समान हैं चाहे वह मुसलमानों का हो, हिन्दुओं का हो या अन्य किसी धर्म का।*

राम नवमी या दशहरा पर्व । हो ताज़िआ या ईदुल उत्सव ।।
मनाएं वह सभी धर्मों के नव । संग भक्त युक्त हर्ष और गर्व ।।(५५)

भावार्थ: *राम नवमी हो, दशहरा हो, ताज़िआ हो अथवा ईद उत्सव, साईं अपने सभी भक्तों के साथ सभी उत्सव हर्ष और गर्व के साथ मनाते हैं।*

हैं साईं सर्व व्यापक दयालु । हैं भक्तों के सदैव कृपालु ।।
हैं भक्तों के निःस्वार्थ हितालु । रखें ध्यान वह सदैव हृदयालु ।।(५६)

भावार्थ: *साईं सर्व-व्यापक दयालु प्रभु हैं। भक्तों पर वह सदैव कृपा करते हैं। निःस्वार्थ रूप से सभी का हृदय में ध्यान रखते हुए उनके हित की ही सोचते हैं।*

सुनो सभी एक कथा साईं की । की प्राण रक्षा जब शिशु की ।।
है यह कथा उन्नीस सौ दस की । है घटना दिवस दीपावली की ।। (५७)

भावार्थः *साईं ने किस प्रकार एक शिशु के प्राणों की रक्षा की, यह कथा सुनो। यह (सन) उन्नीस सौ दस के दीपावली दिवस की घटना है।*

था दिन शीत तापते अग्नी । दहक रही थी अति उग्र धूनी ।।
सहसा डाला कर साईं धूनी । जला हस्त हो अति दर्द वेदनी ।। (५८)

भावार्थः *(साईं) इस शीत दिवस पर बाबा प्रज्वलित धूनी में (हाथ) ताप रहे थे। अचानक उन्होंने अपना हाथ धूनी में डाल दिया। इस कारण हाथ जल जाने से त्वचा में उन्हें अत्यंत पीड़ा हुई।*

पीछे खींचे तब साईं श्यामा । हस्त जलाए क्यों तुम सर्वात्मा ।।
बोले मधुर वचन तब परमात्मा । नहीं दुःख जला हस्त श्यामा ।। (५९)

भावार्थः *श्यामा जी ने उन्हें तुरंत (अग्नि से) पीछे खींचा। (श्यामा जी बोले) 'हे प्रभु, आपने अपना हाथ क्यों जला लिया?' साईं प्रभु तब मधुर वचन बोले, 'श्यामा, मुझे अपने हाथ जल जाने का कोई दुःख नहीं है।'*

हर्षित हूँ बचाए शिशु प्राना । अन्यथा उसे भट्ठी में जल जाना ।।
धोंक रही भट्ठी एक लुहारिना । यकायक बोला पति तुरंत आना ।। (६०)

भावार्थः *मुझे प्रसन्नता है कि मैंने एक शिशु के प्राण बचा लिए अन्यथा वह भट्ठी में जल कर मर जाता। एक लोहारिन भट्ठी धोंक रही थी, तभी अचानक उसके पति ने तुरंत आने को कहा।*

भूली बैठा शिशु उसके आँचल । दौड़ी पास वह पति द्रुतिचल ।।
तब गिर पड़ा शिशु तपेलाचल । डार हस्त बचायो मैंने नवल ।। (६१)

भावार्थ: *वह यह भूल गई कि उसके आँचल में शिशु है। अपने पति के पास तुरंत वेग गति से दौड़ी। शिशु (अभाग्य से) भट्ठी में गिर गया। मैंने तुरंत (भट्ठी में) हाथ डालकर उस शिशु का बचा लिया।*

है ऐसा महान साईं चरित्र । सुमिरन सों होए हिय पवित्र ।।
यह प्रभु साईं कृपा मन्त्र । करे दूर मोह माया अभिमन्त्र ।।(६२)

भावार्थ: *ऐसा महान साईं का चरित्र है। जो भी प्राणी उनकी स्तुति करेगा, उसे पवित्रता प्राप्त होगी। उसे प्रभु साईं का कृपा मन्त्र मिलेगा। वह माया और अहंकार से दूर रहेगा।*

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

कष्ट एवं दुर्भाग्य निवारण

करे सुमिरन साईं जो भी भक्त । हों दूर तुरंत उनकी सब चिंत ।।
हो मंगल हों दूर सब आर्त । रहें सुरक्षित करें साईं उपकृत ।। (६३)

भावार्थ: *जो भक्त साईं का स्मरण करेगा (उनकी स्तुति करेगा), उसकी सभी चिंताएं दूर होंगी। सभी कष्ट दूर होंगे और मंगलता प्राप्त होगी | साईं के आशीर्वाद से सुरक्षित रहेंगे|*

साईं स्वयं बोले यह वचन महन । मरण बाद भी करूँ निष्कृयन ।।
बनेंगी मेरी अस्थि भवतारन । करें सदा भक्त राह अनुज्वालन ।। (६४)

भावार्थ: *साईं ने स्वयं यह वचन दिया है कि समाधि उपरान्त भी वह उद्धार करते रहेंगे। उनकी अस्थियां (उनके भक्तों) संसार रूपी भव को तारेंगी और उनका सदैव मार्ग प्रदर्शन करेंगी।*

थे दामू अन्ना साईं के भक्त । उन्हें की दो बार हानि से बचत ।।
एक बार कपास क्रयाक्रयत । दूसरी बार की अन्न विक्रयत ।। (६५)

भावार्थ: *दामू अन्ना साईं के एक अत्यंत भक्त थे। उन्हें साईं ने दो बार हानि से बचाया। एक बार कपास के व्यापार में, और दूसरी बार अन्न के व्यापार में।*

करे निवारण सब दारुण कष्ट । साईं कृपा बने वह उत्कृष्ट ।।
चुरायो धन उनको निकृष्ट । थी उसमें नथ पत्नी अंतर्विष्ट ।। (६६)

भावार्थ: *(साईं ने) उनके सभी कष्टों का निवारण कर उन्हें श्रेष्ठ व्यक्ति बनाया। एक बार एक धूर्त ने उनका धन चुरा लिया जिसमें उनकी पत्नी की नथ भी सम्मिलित थी।*

रोए वह चित्र साईं अभिमुखन । करें दूर दुःख वह करें निवेदन ।।
हो वापस धन था उनका मन्मन् । करें मदद गुरुवर बन परिजन ।। (६७)

भावार्थ: *साईं के चित्र के समक्ष वह रोने लगे। वह विनती करने लगे कि (साईं) मेरा दुःख दूर करें। उनका धन वापस मिले, ऐसी उनकी इच्छा थी। गुरुदेव (साईं) उनके मददगार बनें।*

हुआ आश्चर्य जब वह देखति । आ रहा था चोर संग ले संपत्ति ।।
पड़ा पग वह था क्षमा मांगति । लालच सों हुई बुद्धि भ्रष्टति ।। (६८)

भावार्थ: *तभी उन्हें अत्यंत अचम्भा हुआ जब उन्होंने देखा कि चोर उनका (चुराया हुआ) धन लेकर आया है। उनके पैर पड़कर उनसे क्षमा याचना करते हुए कह रहा था कि लालच में उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी।*

करो स्वीकार मेरा नमन साईं । की कृपा गुरुदेव की नाईं ।।
तुम्हीं मेरे जनयित्र गोसाईं । करो रक्षा सदैव मेरे साईं ।। (६९)

भावार्थ: *(दामू अन्ना कहने लगे) हे साईं, मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए| आपने गुरु की भांति कृपा की है। आप ही मेरे माता एवं पिता हैं। इसी प्रकार सदैव मेरी रक्षा करते रहिए।*

था गोवा में रहता साईं भक्त । चुराया धन उसका एक कुर्वत् ।।
दुःखमय सदैव रहता रुदित । था वह अति शोक निराशा ग्रस्त ।। (७०)

भावार्थ: *गोवा में साईं के एक भक्त रहते थे। एक अनुचर ने उनका धन चुरा लिया। (धन चोरी होने के कारण) वह रुदन करते हुए अत्यंत दुःखी एवं निराश रहते थे।*

हुए साईं प्रगट उसके सम्मुख । रूप फ़कीर था ओजस्वी मुख ।।
बोले वह मधुर सुवचन स्व-मुख । मानो यह कहना छोड़ो दुःख ।। (७१)

भावार्थ: *तब साईं उनके समक्ष प्रगट हुए। उनका रूप फ़कीर और ओजस्वी मुख था। वह मधुर सुवचन बोले, 'मेरा कहना मानो और दुःख छोड़ो।'*

लो यह संकल्प तुम अपने हृदय । मिले नहीं जब तक तुम्हें चौर्य ।।
तजो भोजन जो हो अति प्रिय । मिले तुम्हें धन हो न वचन असत्य ।। (७२)

भावार्थ: *(फ़कीर रूप में साईं बोले) तुम अपने हृदय में यह संकल्प लो कि जब तक तुम्हें चुराया हुआ धन (वापस) नहीं मिल जाता तब तक तुम अपने प्रिय भोजन को त्याग दोगे। तुम्हें धन (वापस) मिल जाएगा। यह वचन असत्य नहीं हो सकता।*

जब मिल जाए तुम्हें चौर्य धन । जाओ शिर्डी करो संत दर्शन ।।
करेंगे सब कष्ट दूर श्री नियंत । दूँ मैं आशीष तुम्हें अंतर्मन ।। (७३)

भावार्थ: *जब तुम्हें (चुराया हुआ) धन मिल जाए तब तुम शिर्डी जाओ। वहां संत के दर्शन करो। (उनकी कृपा से) ईश्वर तुम्हारे सभी कष्ट दूर कर देंगे। मैं यह आशीर्वाद तुम्हें हृदय से देता हूँ।*

हो गया तुरंत तब एक कौतुक । आ गया निकृष्ट ले सब मुद्रक ।।
स्वीकारो स्वामी यह आयक । करो क्षमा मुझे करुनानायक ।। (७४)

भावार्थ: *(फ़कीर के जाने के पश्चात) शीघ्र ही एक आश्चर्य हुआ। चोर सभी धन लेकर उनके पास आया और विनती करने लगा, 'हे स्वामी, अपना यह धन स्वीकार कीजिए। हे करुणामूर्ति, मुझे क्षमा कीजिए।*

तब करें स्मरण शब्द फ़कीर के । हुए अश्रुमय दृश् भक्त साईं के ।।
गए शिर्डी किए दर्शन संत के । हुए तृप्त तब नैन हरि भक्त के ।। (७५)

भावार्थ: *फ़कीर के शब्दों को स्मरण कर, तब साईं भक्त के नैनों में जल भर आया। (उसके पश्चात्) उन्होंने शिर्डी जाकर साईं के दर्शन किए और अपने नैनों को तृप्त किया।*

सुनो कथा अब एक अन्य भक्त की । साईं भक्त श्री साठे जी की ।।
कष्टों से हुए अधोमुखी की । हुई हानि व्यापार इन भद्र की ।। (७६)

भावार्थ: *साईं के अन्य भक्त श्री साठे जी की अब कथा सुनो। वह सज्जन व्यापार में हानि के कारण कष्टों से अधोमुखी थे।*

थे कोतवाल रहे ढूंढ उद्यमा । चल रहे आपराधिक मुकदमा ।।
लिए शरण साईं वह हुतात्मा । आए शिर्डी श्री साठे भद्रमा ।। (७७)

भावार्थ: *उन पर आपराधिक मुकदमे चल रहे थे, जिस कारण पुलिस उनको ढूंढ रही थी। उन दुःखी प्राणी ने साईं की शरण ली| वह सज्जन श्री साठे जी शिर्डी आए।*

गहे पग त्राहि त्राहि पुकारा । तब प्रभु साईं दुःख निवारा ।।
आरक्षी सब प्रयास कर हारा । जब साईं का मिला सहारा ।। (७८)

भावार्थ: *(शिर्डी आकर साठे जी ने) हे साईं, मेरी रक्षा करो, रक्षा करो, पुकारा। तब हरि कृपा से उनके सभी दुःख नष्ट हुए। पुलिस बहुत प्रयास कर हार गई (उनका कुछ ना बिगाड़ सकी)। उन्हें साईं का सहारा मिला हुआ था।*

गुरु साईं का अनुग्रह पाए । तब व्यापार में वह नाम कमाए ।।
मुकदमा सभी समाप्त कराए । धन-धान्य मान वह फिर से पाए ।। (७९)

भावार्थ: *साईं का उन्हें आशीष मिला और (फिर से) उन्होंने व्यापार में नाम कमाया (सफलता प्राप्त की। (उनके विरुद्ध) सभी मुकदमे समाप्त हो गए। फिर से उन्हें धन-धान्य और सम्मान की प्राप्ति हुई।*

किए वह तब गुरु चरित्र पठन । पाए फिर वह पद यश और धन ।।
चिंता-हीन हुए मुक्त भव बंधन । पाई सुख शान्ति हुआ स्थिर मन ।। (८०)

भावार्थ: *तब उन्होंने गुरु चरित्र का पाठ किया। (इसके पठन से) उन्हें यश, धन एवं पद की फिर से प्राप्ति हुई। चिंता से रहित होकर वह भव बंधन से मुक्त हो गए। उन्हें सुख शान्ति मिली और मन स्थिरता को प्राप्त हुआ।*

थे अमरावती के एक विधि ज्ञानी । खापर्डे जी थे सब जग जानी ।।
थे महान स्वाधीनता सेनानी । करते अनुसरण गाँधी वानी ।। (८१)

भावार्थ: *अमरावती के एक अधिवक्ता थे, जिन्हें सारा संसार खापर्डे जी नाम से जानता था। वह गाँधी जी के अनुयायी एवं महान स्वतन्त्रता सेनानी थे।*

साईं शरण के थे वह अति लुब्धी । अंग्रेज़ों के थे वह विरुद्धी ।।
क्रान्ति के वह शंसित अपराधी । थे देश भक्त और निरपराधी ।। (८२)

भावार्थ: *वह साईं शरण के अत्यंत इच्छुक थे। वह अंग्रेज़ों के विरुद्ध थे। (उन्होंने) उन पर क्रान्ति (देश द्रोह) का आरोप लगा रखा था। वह देश भक्त एवं निरपराधी थे।*

श्री साईं ने उन्हें अभय किया । शिर्डी में उचित निवास दिया ।।
साईं ने उन्हें सुरक्षित किया । अबाध सभी दुःखों से किया ।। (८३)

भावार्थ: *साईं ने उन्हें अभयदान दिया तथा शिर्डी में ही उनके निवास की व्यवस्था की। साईं ने उन्हें सुरक्षित किया और सभी दुःख से रहित किया।*

थे अस्वस्थ भक्त साईं श्री तात्या । थी घोर कष्ट में उनकी काया ।।
त्याग स्व-प्राण उन्हें बचाया । माँ तात्या का ऋण था चुकाया ।। (८४)

भावार्थ: *जब श्री साईं भक्त तात्या अस्वस्थ थे, उनकी काया घोर कष्ट में थी, तब तात्या जी की माता का ऋण चुकाने हेतु अपने (साईं ने) प्राण त्याग कर (उन्होंने) तात्या जी के प्राण बचाए।*

था सन अठारह सौ अस्सी शक । थी दशा तात्या अति चिंताजनक ।।
लगा काल निश्चित मृत्यु सूचक । तब हुई घटित घटना अचानक ।। (८५)

भावार्थ: *सन अठारह सौ अस्सी शक था। तात्या की स्थिति अत्यंत चिंताजनक थी। ऐसा लग रहा था उनका निश्चित मृत्यु का समय आ गया था। तभी अचानक एक घटना घटित हुई।*

हुए जीवित तात्या भक्त महन । त्यागे प्राण श्री साईं यज्वन ।।
धन्य धन्य मेरे साईं भगवन । रहें हम सदैव तुम्हारे निघ्न ।।(८६)

भावार्थ: *अनन्य भक्त तात्या जीवित हो गए, लेकिन पूजित साईं ने अपने प्राण त्याग दिए। हे प्रभु साईं आप धन्य हैं। हम सदैव आपके आश्रित हैं।*

हुआ श्यामा जब दंश विषार । पहुंचे वह तुरंत साईं आगार ।।
हो रहा था तन विष विस्तार । करो साईं दूर यह विकार ।।(८७)

भावार्थ: *जब श्यामा जी को सर्प ने काट लिया था, वह साईं निवास (द्वारका माई) पहुंचे। विष पूरे शरीर में फैल रहा था। उन्होंने साईं से प्रार्थना की कि वह इस दुष्प्रभाव से उन्हें बचाएं (विष उतार दें)।*

दिए श्री साईं तब विष आदेश । बम्मन उतर तुरंत न चढ़ अग्रेष ।।
जा जा दूर तुरंत रिपु विशेष । हुए विषहीन तब पूर्ण भक्तेष ।।(८८)

भावार्थ: *तब साईं ने विष को आदेश दिया, 'हे बम्मन (सर्प को बम्मन भी कहा जाता है), तुरंत उतर, आगे न बढ़। हे विशेष शत्रु, तुरंत दूर जा।' (साईं के इस आदेश से) श्रेष्ठ भक्त (श्यामा जी) पूर्णतः विषहीन हो गए।*

मैनाताई जी के प्राण बचाए । प्रसव पीड़ा उपचार कराए ।।
श्री रामगीर बूवा बुलवाए । शीघ्र उदी जामनेर भिजवाए ।।(८९)

भावार्थ: *(श्रीमती) मैनाताई के प्राणों की रक्षा की। प्रसव पीड़ा में जब उनकी स्तिथि चिंताजनक हो रही थी, तब रामगीर बूवा जी के हाथों तुरंत उदी जामनेर पहुंचवाई।*

जामनेर को तुरंत गमन कीजिए । दी आज्ञा अब देर मत कीजिए ।।
विनती साईं बूवा जी करिए । प्रभु धारें हम बस दो रुपिए ।।(९०)

भावार्थः *साईं ने तब (रामगीर बूवा जी को) आज्ञा दी, 'आप शीघ्र ही जामनेर को प्रस्थान कीजिए।' तब रामगीर बुवा जी ने (साईं से) विनती की, 'हे प्रभु, मेरे पास तो केवल दो रुपये हैं।'*

नहीं पर्याप्त धन हेतु अनुतर । पहुँच सकूं जलगांव अधिकतर ।।
है जामनेर जलगांव दूरतर । तीस मील मेरे साईं ईश्वर ।। (९१)

भावार्थः *(रामगीर बुवा जी बोले) 'मेरे पास (जामनेर जाने के लिए) पर्याप्त किराया नहीं है। मैं (दो रुपयों से) अधिकतर जलगांव पहुँच सकता हूँ। लेकिन हे प्रभु, जलगांव से जामनेर तीस मील की दूरी पर है।'*

हो कैसे साईं संभव गोचरन । हो नहीं जब धन पास सम्पन्न ।।
तब बोले साईं अति मधुर वचन । हैं हम सब ईश्वर के नियंत्रन ।। (९२)

भावार्थः *(रामगीर बुवा जी बोले) जब पास पर्याप्त धन नहीं है तो मेरा वहां पहुँचना कैसे संभव हो सकता है? तब साईं अति मधुर वचन बोले, '(हे रामगीर) हम सब ईश्वर के आधीन हैं।'*

दें निःसंदेह पर्याप्त भगवन । करो यात्रा ले नाम नारायन ।।
बुवा चले तब साईं सुमिरन । पहुंचे जलगांव मंडल स्थापन ।। (९३)

भावार्थः *(साईं बोले) (हे रामगीर) सर्वव्यापी का नाम लेकर यात्रा करो। वह निःसंदेह पर्याप्त (धन) देंगे। तब रामगीर बुवा साईं का नाम ले कर चल दिए और (रेलगाड़ी से) जलगांव मंडल (रेलवे स्टेशन) पहुँच गए।*

सुना स्वर तब एक तांगा चालक । कौन आया शिर्डी से यात्रक ।।
है जामनेर जाने का इच्छुक । बोले रामगीर हम ही वह जातक ।। (९४)

भावार्थः *तब उन्होंने (रामगीर बूवा ने) एक तांगा चालक का स्वर सुना, 'शिरडी से कौन यात्री आया है जो जामनेर जाने का इच्छुक है। तब रामगीर बोले, 'हम ही वह व्यक्ति हैं।'*

अति अचंभित तब रामगीर हुए ।अवश्य चमत्कार श्री साईं किए ।।
तब बैठ तुरगरथ वह चल दिए ।तुरंत मध्य मार्ग में पहुँच गए ।।(९५)

भावार्थ: *रामगीर यह देखकर अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए। अवश्य ही यह चमत्कार साईं ने किया है। तब वह तांगे में बैठकर (जामनेर को) चल दिए। शीघ्र ही मध्य मार्ग में वह पहुँच गए।*

तांगा तब रोका कोचवान । किया भेंट बुवा वह जलपान ।।
कोचवान लगता मुसलमान । देख वेश यह सोचें भद्रवान ।।(९६)

भावार्थ: *तब (मध्य मार्ग में) कोचवान ने तांगा रोका और उन्हें (रामगीर बूवा जी को) जल पान भेंट किया। (रामगीर बूवा जी ने कोचवान की) वेशभूषा देखकर अनुमान लगाए कि यह तो मुसलमान लगता है।*

समझी अन्तर्दशा तब चालक ।बोला हूँ मैं क्षत्रिय हे नायक ।।
स्वीकारो यह भोजन बेझिझक ।बोला चालक वचन यह रोचक ।।(९७)

भावार्थ: *उनकी (रामगीर बूवा जी की) अन्तर्दशा कोचवान ने समझ ली। तब चालक मधुर वचन बोला, 'हे श्रेष्ठ पुरुष, मैं (जाति से) क्षत्रिय हूँ। आप निःसंकोच यह भोजन स्वीकार करें।'*

रामगीर बुवा तब जलपान किए ।फिर जामनेर को प्रस्थान किए ।।
अति वेग गति अश्व तब चल दिए ।अविलम्ब गंतव्य वह पहुँच गए ।।(९८)

भावार्थ: *(रामगीर) बूवा ने तब जलपान किया। तत्पश्चात जामनेर के लिए प्रस्थान किया। (तांगे में जुते) अश्व तीव्र गति से दौड़ने लगे। शीघ्र ही वह गंतव्य स्थान (जामनेर) पहुँच गए।*

गए वह लघुशंका पहुँच स्थानक ।लौटे तब न देखें कोई वाहक ।।
नहीं था तांगा न वहां चालक ।हुए विस्मित रामगीर भद्रक ।।(९९)

भावार्थ: *गंतव्य स्थान पर पहुंचने के बाद रामगीर जी मूत्र विसर्जन हेतु गए। जब वह लौट कर आए तो उन्हें वहां कोई तांगा दिखाई नहीं दिया। न तो तांगा ही था और न कोचवान। यह (लीला) देखकर भद्र (रामगीर) अत्यंत चकित हुए।*

गृह वह तब गए श्री नाना जी । दी तब विभूति मैनाताई जी ।।
हो गईं स्वस्थ्य तुरंत बाई जी । किए ऐसी कृपा प्रभु साईं जी ।।(१००)

भावार्थ: *तब वह नाना जी के गृह गए। (जाते ही) उन्होंने मैनाताई जी को विभूति दी। बाई जी (मैनाताई विभूति पाकर) तुरंत स्वस्थ हो गईं। (सभी ने) भगवान् साईं बाबा का (तब) आभार प्रगट किया।*

गाएं जो भक्त यह चरित महन । हों साईं उन पर अति प्रसन्न ।।
हम आश्रित साईं अनुकम्पन । दें हमें दिव्य सुख शान्ति अमन ।।(१०१)

भावार्थ: *जो भक्त इस महान चरित्र का गायन करेंगे, साईं उन पर अत्यंत प्रसन्न होंगे। हम साईं की कृपा के आश्रित हैं। वह हमें दिव्य सुख, शान्ति और चैन दें।*

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

संतति प्रदान

पलटे भाग्य निःसन्तानों के ।बने पिता आशीष श्री साईं के ।।
दामू अन्ना एक भक्त साईं के ।थे संतान-हीन कारण कर्म के ।।(१०२)

भावार्थः *साईं के आशीर्वाद से निःसन्तानों के भाग्य पलट गए और वह पिता बन गए। साईं के एक भक्त दामू अन्ना अपने कर्म (फल) के कारण संतान विहीन थे।*

साईं किए आम्र-लीला दैवत ।पा सके हितक चार वह शुचित ।।
न कोई मित्र सम साईं जगत । करें सदैव रक्षा वह स्व-भक्त ।।(१०३)

भावार्थः *साईं ने दैव्य आम्र-लीला के द्वारा उन दुःखी व्यक्ति को चार संतानें दीं। साईं के समान इस विश्व में कोई मित्र नहीं है। वह अपने भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं।*

नांदेद के थे रतन साईं भक्त ।वह सरल उदार दयालु अनुरक्त ।।
दास गनु उनके मित्र निकटवर्त ।आए नांदेद वह साईं अनव्रत ।।(१०४)

भावार्थः *नांदेद के साईं भक्त रतन (वालिया) जी अति सुगम, उच्च विचार के दयावान पुरुष थे। दास गणु जी उनके घनिष्ठ मित्र थे। वह साईं भक्त (दास गणु जी) नांदेद आए।*

थे उदास रतन न कोई संतति ।कैसे पाऊँ गनु संत मैं वंशति ।।
तब दास गनु दी उन्हें सम्मति ।जाओ श्री साईं शरणागति ।।(१०५)

भावार्थः *रतन (वालिया जी) उदास थे क्योंकि उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने संत (दास गणु) से पूछा कि उन्हें संतति किस प्रकार मिल सकती है? दास गणु जी ने तब उन्हें प्रभु साईं की शरण में जाने का परामर्श दिया।*

आए शिर्डी रतन की तब वंदन ।हे श्री साईं जग पालक भगवन ।।
करो अब दूर मेरा शिरोवेदन ।दो आशीष पाऊँ मैं शिशुजन ।।(१०६)

भावार्थ: *तब रतन (वालिया जी) शिर्डी आए और उन्होंने साईं से प्रार्थना की, 'हे साईं, आप तो संसार का पालन करने वाले (स्वयं) भगवान् हैं। मेरी चिंता दूर कीजिए। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं संतान प्राप्त कर सकूं।*

सुने वह विनती हृदय शुचित । वरद हस्त सर रख किए आश्वस्त ।।
ईश्वर निर्मल दया की मूरत । सदैव करें सब इच्छा निरुक्त ।।(१०७)

भावार्थ: *वह (साईं) पवित्र हृदय की विनती सुने। अपना कृपा हस्त उनके सर पर रख उन्हें आश्वस्त किया, (और बोले), 'ईश्वर तो निर्मल मूर्ति हैं। वह तो सदैव सब की इच्छा पूर्ति करते हैं।'*

लो उदी हो जाओ निर्भीका । बनो पिता शीघ्र चार बालिका ।।
हुआ ऐसा उपकार प्रभु का । साईं करें निर्मूल दुर्भाग्य का ।।(१०८)

भावार्थ: *(साईं बोले) अब उदी ग्रहण करो, और निडर हो जाओ। शीघ्र ही तुम चार पुत्रियों के पिता बनोगे।' इस प्रकार उन पर प्रभु का उपकार हुआ। उनके समस्त दुर्भाग्यों का साईं ने पूर्ण रूप से नाश कर दिया।*

थे एक भक्त साठे हरी विनायक । थे पद राय बहादुर सम्मानक ।।
निःसंदेह वह महान अधिनायक । पर अभाग्य से थे निःसन्तानक ।।(१०९)

भावार्थ: *एक भक्त हरी विनायक साठे जी राय बहादुर पद से सम्मानित थे। वह निःसंदेह एक बड़े नेता थे। परन्तु अभाग्य से निःसंतान थे।*

पा कर आशीष प्रभु श्री साईं । हुआ उदित भाग्य संतानें पाईं ।।
हैं ऐसे महान मेरे गोसाईं । करें कृपा गुरुदेव की नाईं ।।(११०)

भावार्थ: *प्रभु साईं के आशीर्वाद से उन्हें संतानों की प्राप्ति हुई। मेरे साईं अत्यंत महान हैं। वह सदैव गुरु की तरह कृपा करते रहते हैं।*

थे सोलापुर के भक्त सखाराम । तरसें हिय दें संतान भगवान ।।
स्तुति करें वह सभी सतनाम । किए भ्रमण वह सब पावन धाम ।। (१११)

भावार्थ: *सोलापुर के भक्त सखाराम जी थे। वह हृदय में तड़प रहे थे कि भगवान् उन्हें संतान दें। उन्होंने सभी पवित्र तीर्थों में जाकर सभी देवताओं की स्तुति की।*

एक सखी दियो पत्नी सुझाव । लो शरण चरण संतों के राव ।।
हैं साईं अति कृपालु स्वभाव । समझो उन्हें कामधेनु गाव ।। (११२)

भावार्थ: *उनकी पत्नी की एक सहेली ने उन्हें सुझाव दिया कि संतों में श्रेष्ठ संत (साईं) के चरणों की शरण लो। साईं अत्यंत कृपालु स्वभाव के कामधेनु (इच्छाओं की पूर्ति करने वाले गौ माता) गाय की भांति हैं।*

तब युगल तुरंत शिर्डी आए । श्यामा मिल तब व्यथा सुनाए ।।
श्यामा समीप तब गुरुदेव गए । दें पुत्र उन्हें अनुरोध किए ।। (११३)

भावार्थ: *तब युगल (पति-पत्नी) शिर्डी आए। (साईं बाबा के अनन्य भक्त) श्यामा जी से मिलकर उन्हें अपनी व्यथा सुनाई। श्यामा जी ने तब गुरुदेव (साईं) के समीप जा उन्हें पुत्र (का वरदान) देने का अनुरोध किया।*

बोले साईं तब हो अति प्रसन्न । दें संतति कृपालु श्री भगवन ।।
करें वह वर्ष एक प्रतिपालन । पाए पुत्र कहे जैसा गुरुजन ।। (११४)

भावार्थ: *साईं अति प्रसन्न होकर बोले, 'अत्यंत कृपालु प्रभु संतति देंगे| एक वर्ष प्रतीक्षा करो, इन्हें पुत्र की प्राप्ति होगी।' जैसा गुरुदेव ने कहा था, वही हुआ।*

लिया पुत्र जब गृह उनके जन्म । आए वह शिर्डी नवल सहगमन ।।
रखे वह पुत्र साईं के चरन । था आनंदित उनका तन और मन ।। (११५)

भावार्थः *जब पुत्र ने उनके गृह में जन्म लिया तब नवजात को लेकर वह (साईं के आशीर्वाद हेतु) शिर्डी आए। उन्होंने अपने पुत्र को साईं के चरणों में डाल दिया। उनका तन और मन आनंदित हो रहा था।*

थे सपतनेकर साईं आलोचक । थे वह पिता केवल एक पुत्रक ।।
हुआ अकालान्त प्रिय बालक ।आए शिर्डी बन क्षमायाचक ।।(११६)

भावार्थः *सपटणेकर जी साईं पर अविश्वास रखने वाले एक व्यक्ति थे। उनके इकलौते पुत्र की दुर्भाग्य से मृत्यु हो गई। उन्होंने साईं के प्रति अविश्वास पर शिर्डी आकर क्षमा याचना की।*

साईं तो हैं दया की मूर्ति ।करें अपराध क्षमा सब व्यक्ति ।।
रख सर कर दी साईं आश्वस्ति । दूँ वर हो पत्नी फिर से गर्भति ।।(११७)

भावार्थः *साईं तो दया की मूर्ति हैं। वह तो सभी के अपराध क्षमा कर देते हैं। उन्होंने (साईं ने) अपना वर-हस्त उनके (सपटणेकर जी) शीश पर रखा और बोले, 'मैं वरदान देता हूँ कि तुम्हारी पत्नी फिर से गर्भवती हो।'*

लिया पुनर्जन्म वह मृत पुत्र ।हुई प्रवेश आत्मा गर्भ तत्र ।।
हुए वह पिता तीन प्रिय पुत्र ।आभार साईं आप सब के जनत्र ।।(११८)

भावार्थः *उसी मृत पुत्र की आत्मा ने गर्भ में प्रवेश कर पुनर्जन्म लिया। (बाद में) वह (सपटणेकर जी) तीन प्रिय पुत्रों के पिता बने। धन्यवाद साईं, आप सब के रक्षक हैं।*

हुए पुत्र तीन श्री सपतनेकर ।भास्कर मुरलीधर और दिनकर ।।
संत साईं हैं महान लीलाकर ।पाएं शांति उनके गुण गाकर ।।(११९)

भावार्थः *श्री सपटणेकर जी के तीन पुत्र हुए, भास्कर, मुरलीधर एवं दिनकर। संत साईं की लीलाएं महान हैं। हम साईं का गुणगान कर शान्ति पाएं।*

प्रणाम साईं समेत परिवार ।हो तुम हमारे जीवन आधार ।।
आए शरण हमें दो परिहार ।दो हृदय शान्ति हे अमृतधार ।।(१२०)

भावार्थ: *(हे साईं) हम परिवार सहित आपको प्रणाम करते हैं। आप हमारे जीवन के आधार हैं। हम आपकी शरण आए हैं, हमें मुक्ति दीजिए। हे अमृतधार (अमृत की वर्षा करने वाले प्रभु), हमारे हृदय को शान्ति दीजिए।*

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

फलश्रुति (पठन/ श्रवण साईं महात्म्य)

हे श्री साईं तुम प्रभु मानन । हे सच्चिदानंद करें हम पूजन ।।
तुम हो प्रभु जो करें सृजन । हैं हम दीन दुःखी प्रजाजन ।। (१२१)

भावार्थः *हे प्रभु साईं, आप हमारे सम्माननीय हैं। हे सच्चिदानन्द, हम आपकी स्तुति करते हैं। आप ही इस विश्व के सृजन करता हैं। हम दुःखी दीन प्रजा हैं।*

हो तुम ही इस जग के आधार । साईं हमारे एकमात्र आशार ।।
दें कामधेनु समान उपहार । करें प्रकट हम दीन आभार ।। (१२२)

भावार्थः *(हे साईं) तुम ही इस विश्व के आधार हो। हमारे एकमात्र सहारा हो। कामधेनु (गाय) समान उपहार देने वाले हो। हम दीन आपके प्रति आभार प्रकट करते हैं।*

साईं हैं मुनि अगस्त्य समान । तरें भव हो कृपा संत महान ।।
द्वेष इर्ष्य अघ निंदा सब स्थान । करो हमारा इन सब से कल्यान ।। (१२३)

भावार्थः *साईं महर्षि अगस्त्य के समान हैं। महान संत की कृपा भव तार देती है। निंदा, घृणा, ईर्ष्या एवं पाप सभी स्थान पर हैं। इन सब से हमारा कल्याण कीजिए (अर्थात इन हमें छुटकारा दीजिए)।*

करें प्रार्थना हम पड़ें चरन । करें शुभ साईं हम सब जन ।।
करें वह दूर वासना तन मन । हों हमारी भावना गुणवत्तन ।। (१२४)

भावार्थः *(साईं के) चरणों पर पड़कर हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि हे दयालु साईं, आप हम प्राणियों का शुभ करें। हमारे मन तन की वासना को दूर कर श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश करें।*

हर घर में हो साईं-सच्चरित्र । है साईं महात्म्य कथा पवित्र ।।
पढ़े सुने जो यह गुरु चरित्र । रिपु भी बनें उनके निकट मित्र ।। (१२५)

भावार्थः *हर घर में पावन साईं-सच्चरित्र हो। साईं महात्म्य कथा अति पावन है। जो यह गुरु चरित्र पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसके शत्रु भी घनिष्ठ मित्र बन जाएंगे।*

हों कष्ट दूर हो जीवन धन्य । नहीं वांछित पूजें कोई अन्य ।।
इहलोक सुखी स्वयं व् परिजन्य । परलोक पाएं धाम हरि पुन्य ।। (१२६)

भावार्थः *(जो साईं सच्चरित्र अथवा साईं महात्म्य का पठन/ श्रवण करेंगे) उनके सभी कष्ट दूर होंगे और उनका जीवन धन्य होगा। (साईं ने स्वयं ऐसा कहा है) किसी और देवता की स्तुति की आवश्यकता नहीं। इहलोक (पृथ्वी लोक) में स्वयं एवं सभी सम्बन्धी सुख की प्राप्ति करेंगे, और परलोक (मरणोपरांत) में प्रभु का धाम पाएंगे।*

किए साईं स्वयं सुमुख कथयन । करे मेरी कथा भव निर्मोचन ।।
मेरी लीला अपार विस्मयजन । दे सुख इहलोक मोक्ष जब मरन ।। (१२७)

भावार्थः *साईं ने अपने पवित्र मुख से स्वयं ही कहा है कि मेरी कथा भव को तारने वाली है। मेरी लीला अपार अद्भुत है जो इस लोक में सुख और मरण पर मोक्ष देती है।*

पाए परमानंद वह अपने हृदय । हो ज्ञान आत्मबोध पाए दैव्य ।।
हों नष्ट वासना पाए ऐश्वर्य । बढ़े हिय श्रद्धा ज्ञान और धैर्य ।। (१२८)

भावार्थः *(जो भी साईं की लीलाओं का पठन/ श्रवण करेगा) हृदय में उसके परम आनंद की अनुभूति होगी। उसे आत्म-ज्ञान एवं ईश्वर की प्राप्ति होगी, वासनाएं नष्ट होंगी और वह दिव्यता को प्राप्त करेगा। उसके हृदय में ज्ञान, श्रद्धा, और धैर्य (सबूरी) की वृद्धि होगी।*

साईं साईं द्विशब्द उच्चारें । संकटमोचन हरि नाम पुकारें ।।
तन के रोग सब निर्मूल करें । कटें पाप कई जन्म सुधारें ।। (१२९)

भावार्थः *जो भी 'साईं साईं' इन दो संकटमोचन शब्दों का उच्चारण करेंगे, उनकी काया से सभी रोग दूर होंगे। यह नाम जन्म-जन्मांतर के पापों का विनाश करेंगे।*

है साईं दियो वचन सच्चरित्र । जो आए शरण वह होए पवित्र ।।
करें साईं रक्षा बन सत्य मित्र । होगा सुगन्धित सर्वत्र सम इत्र ।। (१३०)

भावार्थ: *साईं ने (साईं) सच्चरित्र में यह वचन दिया है कि जो भी उनकी शरण आएगा, वह उसको पवित्र कर देंगे। सत्य मित्र की भांति उसकी रक्षा करेंगे। उसकी सुगन्धि (यश) पूर्ण विश्व में इत्र की तरह फैलेगी।*

है साईं का यह वैशिष्ट्य । उनका भक्त है सदैव अतुल्य ।।
बने वह साईं विशेष अनुप्रिय । करें जन शुभ सदैव अचिन्त्य ।। (१३१)

भावार्थ: *यह साईं की विशेषता समझो कि वह अपने भक्त को अतुल्य बना देते हैं। वह साईं का अति विशेष प्रिय बन जाता है। प्रभु सदैव मंगल कामना करते हैं।*

नहीं वांछित करें योग अभ्यास । ज्ञान न्याय दर्शन या मीमांस ।।
मन्त्र पंचाग्नि तप और उपास । अष्टांग योग ध्यान या उपवास ।। (१३२)

भावार्थ: *(साईं की स्तुति के लिए) किसी प्रकार के योग अभ्यास, न्याय दर्शन, मीमांस इत्यादि का ज्ञान, पांच अग्नि यज्ञ, तपस्या, अष्टांग योग साधना अथवा उपवास की कोई आवश्यकता नहीं है।*

जैसे कर नाविक पर विश्वास । हो पूर्ण नदी पार की आस ।।
ऐसे ही कर साईं पर न्यास । तरे जन भव सागर अनायास ।। (१३३)

भावार्थ: *जिस प्रकार नाविक पर विश्वास करते हुए यात्री की नदी पार करने की अभिलाषा पूर्ण होती है, उसी प्रकार साईं पर विश्वास कर प्राणी भव सागर से सरलता से तर जाता है।*

करते हुए साईं लीला स्मरन । करें हरि समान उनका अर्चन ।।
पाएं इहलोक सुख और अमन । हो प्राप्त मोक्ष पश्चात मरन ।। (१३४)

भावार्थः *साईं की लीला का स्मरण करते हुए उनका प्रभु के समान पूजन करें। इहलोक में सुख और शान्ति मिलेगी तथा मृत्यु पश्चात मोक्ष की प्राप्ति होगी।*

वह भक्त मनोवांछित फल पाए। हृदय में जब महात्म्य समाए ।।
प्रातः साईं सुमर उठ जाए। हो शुद्ध पवित्र जल में नहाए ।।(१३५)

भावार्थः *जब हृदय में (साईं) महात्म्य समा जाए, तब भक्त को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। प्रातः उठते ही साईं का स्मरण करे और शुद्ध होकर पवित्र जल में स्नान करे।*

रख साईं चित्र समक्ष करे पूजन। पढ़े महात्म्य संग परिवारजन ।।
करे विनती प्रभु दें स्वस्त्ययन। दें धाम परम मुक्ति जन्म मरन ।।(१३६)

भावार्थः *साईं चित्र को अपने समक्ष रखकर परिवार के साथ (साईं) महात्म्य का पाठ करें। प्रभु से आशीष मांगें कि वह परम धाम दें और जन्म-मरण से मुक्ति दें।*

पाए जैसे समय समुद्र मंथन। सुर और असुर सुधा सम रत्न ।।
तैसे जो करे यह काव्य मनन। पाए वह दिव्य सुख और अमन ।।(१३७)

भावार्थः *जिस प्रकार समुद्र मंथन समय में देव एवं असुरों ने अमृत जैसे रत्नों की प्राप्ति की थी, उसी प्रकार इस काव्य के मनन से प्राणियों को दिव्य सुख और शांति प्राप्त होगी।*

मिल जाए जब सागर मालिनी। पा सके वैपुल्य छुद्र तटिनी ।।
तैसे पठन श्रवन यह ग्रंथनी। हो दया साईं और नारायनी ।।(१३८)

भावार्थः *जिस प्रकार नदी समुद्र से मिलन पर छोटी होने पर भी महानता को प्राप्त होती है, उसी प्रकार इस पुस्तिका के पठन, श्रवण से साईं एवं लक्ष्मी की कृपा से महान बन जाते हैं।*

पाएं धन धान्य जो हों निर्धन । पाएं स्वास्थ्य जो पीड़ित तिहन् ।।
बनें जनयितृ जो निःबालन । हों संपन्न दुःख-रहित वह जन ।। (१३९)

भावार्थः *(इस काव्य ग्रन्थ के पढ़ने/ सुनने से) निर्धनों को धन-धान्य की प्राप्ति होती है। रोगीओं को स्वास्थ्य लाभ होता है। निःसंतान माता-पिता बनते हैं, और प्राणी दुःख से रहित होकर सम्पन्नता प्राप्त करता है।*

करें प्रभु साईं हम पग नमन । करें दया कृपालु श्री भगवन ।।
त्राहि त्राहि हे रूप नारायन । करो कृपा हो मार्ग उज्ज्वलन ।। (१४०)

भावार्थः *प्रभु साईं, हम आपके चरणों को नमन करते हैं। हे कृपालु भगवन हम पर दया कीजिए। हे प्रभु के अवतार, हमारी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। कृपा कीजिए जिससे मार्ग उज्ज्वलित हो।*

एवमस्तु।
श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

शिर्डी साईं बाबा - संक्षिप्त जीवन परिचय

आधार: पुस्तक 'सद्‌गुरु साईं दर्शन - एक बैरागी की स्मरण गाथा', लेखक श्री शशिकांत शांताराम गडकरी

श्री शशिकांत शांताराम गडकरी की पुस्तक **'सद्‌गुरु साईं दर्शन - एक बैरागी की स्मरण गाथा'** के अनुसार महाराष्ट्र के पाथरी (पातरी) गांव में साईं बाबा का जन्म २७ सितंबर १८३० को हुआ था। साईं के जन्म स्थान पाथरी (पातरी) पर एक मंदिर भी बना हुआ है जो इसका प्रमाण स्वरुप है।

इस पुस्तक में साईं के पिता का नाम श्री गोविंद भाऊ और माता का नाम श्रीमती देवकी अम्मा बताया गया है, जो पाथरी के निवासी थे। पुस्तक में ऐसा विवरण है कि उनके पिता कश्यप गोत्र के यजुर्वेदी ब्राह्मण थे।

साईं का परिवार ब्राह्मण अवश्य था परन्तु उनके पिता कर्म-काण्ड में निपुण ब्राह्मण नहीं थे। कर्म-काण्ड में निपुण न होने के कारण वह पुरोहिती नहीं कर पाते थे अतः अपना जीवन-यापन श्रमक कार्य से ही करते थे। साईं के चार भाई और भी थे। बड़ा ही निर्धन परिवार था। साईं के माता पिता जैसे तैसे श्रमक कार्य करके अपना और अपने पांचों बच्चों का पेट पाल रहे थे। साईं के पिता का गांव हैदराबाद निज़ाम के साम्राज्य का एक भाग था। निज़ाम के साम्राज्य में मुस्लिमों का एक हथियारबंद संगठन था जिसे रज़ाकार कहा जाता था। यह रज़ाकार हिन्दुओं को बहुत कष्ट देते थे। उनके अत्याचार जब असहनीय हो गए तो कई हिन्दुओं के साथ साईं के माता पिता ने भी वह गांव छोड़ने का निश्चय किया। वह पंढरपुर आ गए। एक बार जीविका के लिए शहर को जाने हेतु जब उनका परिवार पंढरपुर के समीप बहती भीमा नदी को नाव से पार कर रहा था तो दुर्भाग्य से नाव पलट गई। कई यात्रीओं के साथ साईं के पिता भी भीमा नदी के आगोश में समा गए। उसी समय नदी किनारे खड़े कई लोगों ने इन डूबते हुए यात्रीओं को बचाने का प्रयास किया, जिसमे एक सूफी संत वली फ़क़ीर भी थे। साईं की माता और उनके कुछ पुत्र डूबने से तो अवश्य बच गए पर अत्यंत निर्धन होने के कारण साईं की माता अपने बच्चों का पेट पालने में असमर्थ थीं। अतः फ़क़ीर वली के आग्रह पर उन्होंने अपने एक बच्चे को उन्हें सौंप दिया। उस समय इस बच्चे (साईं) की आयु केवल ८ वर्ष की थी। सूफी संत फ़क़ीर वली तब

उन्हें लेकर ख़्वाजा शमशुद्दीन गाज़ी की दरगाह पर इस्लामाबाद (अब पकिस्तान का एक भाग) आ गए। फ़क़ीर वली की वहां आकस्मिक मृत्यु हो गई। तब इस बच्चे को ख़्वाजा शमशुद्दीन गाज़ी की दरगाह में ही रह रहे एक अन्य सूफी संत फ़क़ीर रोशन शाह ने पालने का उत्तरदायित्व लिया। फ़क़ीर रोशन शाह बच्चे को लेकर तदुपरांत अजमेर आ गए। अजमेर में इस बच्चे ने सूफी मत से प्रभावित इस्लाम धर्म का अध्ययन किया। इसके साथ साथ ही ख़्वाजा चिश्ती की दरगाह में रहने वाले एक हक़ीम साहेब से औषधियों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ कुरान को भी इस बच्चे ने यहीं मुखाग्र कर लिया। कुछ समय बाद फ़क़ीर रोशन शाह इस बच्चे के साथ इलाहाबाद (प्रयागराज) आए जहां दुर्भाग्य से हृदयाघात से उनका भी निधन हो गया। फ़क़ीर रोशन शाह की मृत्यु के बाद फिर से यह बच्चा अनाथ हो गया। यह बच्चा तब गंगा नदी किनारे अनाथ की तरह भिक्षा मांगकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। उसी समय प्रयागराज में एक संतों का सम्मेलन हुआ जिसमें नाथ सम्प्रदाय के संत भी सम्मिलित हुए थे। इस बच्चे का झुकाव नाथ संप्रदाय और उनकी शिक्षाओं की ओर हुआ। यह बच्चा तब नाथ संप्रदाय के प्रमुख से मिला। उनके साथ संत समागम और सत्संग किया। संत सम्मेलन की समाप्ति पर नाथ सम्प्रदाय के संतों ने अयोध्या की यात्रा की। यह बच्चा भी उनके साथ अयोध्या आ गया। यहां नाथ पंथ के प्रमुख ने इस बच्चे को नाथ सम्प्रदाय के शिष्य की पहचान के रूप में एक चिमटा (सटाका) भेंट किया। नाथ संत प्रमुख ने उनके कपाल पर चंदन का तिलक भी लगाया और कहा कि वह हर समय इसका धारण करके रखें। इस बच्चे ने जीवनपर्यंत तिलक धारण तो अवश्य किया, परन्तु चिमटा (सटाका) एक अपने अत्यंत प्रेमी और शिष्य हाज़ी बाबा को भेंट कर दिया। अयोध्या यात्रा के बाद नाथपंथी अपने डेरे पर चले गए। यह बच्चा फिर एक बार अकेले रह गया।

बच्चे को अपने जन्म स्थान पाथरी का कुछ कुछ स्मरण था, अतः वह पाथरी के लिए चल दिया । वह इस आशा में था कि उसकी माता अथवा परिवार का कोई सदस्य तो वहां अवश्य ही मिल जाएगा। पाथरी पहुंचने पर इस बच्चे को पता चला कि वहां उसके परिवार का अब कोई सदस्य नहीं रहता। उनके बारे में भी किसी को कुछ पता नहीं है। इस बच्चे के परिवार के घर के पास एक चाँद मियाँ का घर था। उनकी पत्नी चाँद बीबी इस बच्चे से मिलकर बड़ी प्रसन्न हुईं और उसके रहने और खाने पीने की व्यवस्था हेतु इस बच्चे को समीप के गांव सेलू (सेल्यु) के वैंकुशा आश्रम में ले गई। उस समय इस बच्चे की आयु १५ वर्ष की थी। इस बच्चे से कुछ प्रश्न पूछने के बाद

और उसकी प्रतिभा से प्रभावित हो तब वैकुंशा बाबा ने इस बच्चे को अपने आश्रम में प्रवेश दे दिया। बाद में इस बच्चे को उन्होंने अपना शिष्य भी बना लिया। कहते हैं कि वैकुंशा बाबा ने अपनी महासमाधि से पूर्व इस बच्चे को अपनी सारी दिव्य शक्तियां दीं। उसके पश्चात बच्चे को सब 'बाबा' नाम से सम्बोधित करने लगे।

जब यह बच्चा वैंकुशा बाबा के आश्रम में निवास कर रहा था तो एक दिन अत्यंत अप्रिय घटना घटी। वैंकुशा बाबा जब पंचाग्नि तपस्या की तैयारी कर रहे थे, उस समय कुछ मुस्लिम कट्टरपंथी लोग इस बच्चे पर ईंट, पत्थर फेंकने लगे। बच्चे को बचाने के लिए वैंकुशा बाबा सामने आ गए। इस प्रयास में उनके सिर पर एक ईंट लग गई। वैंकुशा बाबा के सिर से रक्त बहने लगा। इस बच्चे ने तुरंत ही एक कपड़े से उस रक्त को साफ किया। वैंकुशा बाबा ने वही कपड़ा इस बच्चे के सिर पर तीन लपेटे देकर बांध दिया और कहा कि यह तीन लपेटे तुम्हें मुक्ति, ज्ञान एवं सुरक्षा प्रदान करेंगे। जिस ईंट से वैंकुशा बाबा को चोट लगी थी, इस बच्चे ने उसे उठाकर अपनी झोली में रख लिया। इसके बाद इस बच्चे ने जीवन पर्यन्त इस ईंट को अपना सिरहाना बनाया।

स्वास्थ्य प्राप्त करने के पश्चात वैंकुशा बाबा ने इस बच्चे को बताया कि एक बार, ८० वर्ष पूर्व, वह स्वामी समर्थ रामदास गुरुदेव की चरण-पादुका के दर्शन करने के लिए सज्जनगढ़ गए थे। वापसी में वह एक ग्राम शिर्डी में रुके थे। उन्होंने वहां एक मस्जिद के पास नीम के पेड़ के नीचे ध्यान लगाया था। उसी समय समर्थ स्वामी गुरु रामदास जी के उन्हें दर्शन हुए थे। तब समर्थ स्वामी गुरु रामदास जी ने उन्हें बतलाया था कि एक दिन मेरे शिष्यों में से एक शिर्डी में रहेगा जिसके कारण शिर्डी एक तीर्थ क्षेत्र बनेगा। वैकुंशा बाबा ने आगे कहा कि वहीं शिर्डी में मैंने समर्थ स्वामी गुरु श्री रामदास जी की स्मृति में एक दीपक भी जलाया था जो अभी भी वहां नीम के पेड़ के नीचे एक शिला की आड़ में रखा है। इस वार्तालाप के बाद वैकुंशा बाबा ने बच्चे को तीन बार सिद्ध किया हुआ दूध पिलाया। इस दूध को पीने के बाद बच्चे को चमत्कारिक अष्ट सिद्धि शक्तियों की प्राप्ति हुई और वह एक दिव्य पुरुष बन गए। उन्हें परमहंस होने की अनुभूति हुई। वैंकुशा बाबा के महासमाधि लेने के पश्चात इस बच्चे ने जिसे अब सब 'बाबा' नाम से सम्बोधित करने लगे थे, इस आश्रम में रुकने का कोई महत्व नहीं समझा और वैंकुशा बाबा के निर्देशानुसार शिर्डी की ओर चल दिए। इस समय उनकी आयु २२-२३ वर्ष के लगभग थी।

शिर्डी पहुँच उन्होंने अपना आसन उसी नीम के पेड़ के नीचे लगाया जिसका उल्लेख वैंकुशा बाबा ने किया था। कुछ समय वह शिर्डी में रहे, पर एक दिन अदृश्य हो गये।

ऐसा कहा जाता है कि बाबा शिर्डी से निकल पंचवटी गोदावरी के तट पर पहुंचे जहां उन्होंने कुछ समय तक तप किया। यहां बाबा स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी से मिले और उनके आश्रम पर कुछ दिनों निवास किया। तत्पश्चात वह शेगांव जा पहुंचे जहां वे गजानन महाराज से मिले। वहां कुछ दिन रुकने के बाद बाबा देवगिरी के जनार्दन स्वामी की कुटिया पर पहुंचे। वहां कुछ दिन विश्राम करने के बाद वह माणिक प्रभु के आश्रम में माणिक्यापुर चले गए। माणिक प्रभु उस समय के इस क्षेत्र के महान संत थे। उनसे सत्संग प्राप्त कर बाबा बीजापुर होते हुए नरसोबा की वाड़ी पहुंच गए। यहां बाबा ने दत्त अवतार नृसिंह सरस्वती के चरण पादुका के दर्शन किए। यहीं कृष्णा नदी के किनारे एक युवा को तपस्या करते देखा तो उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम शीघ्र ही महान संत बनोगे। यह आशीर्वाद देने वाले संत कोई और नहीं बल्कि स्वयं स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती थे। स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती ने मराठी में लिखित अपनी पुस्तक ‘गुरु चरित्र’ में इसका विवरण दिया है।

इसके पश्चात बाबा सज्जनगढ़ पहुंचे जहां समर्थ गुरु स्वामी श्री रामदास जी महाराज की चरण-पादुका के दर्शन किए। वहां से निकलकर विविध सूफी फ़क़ीरों की दरगाह, हिन्दू संतों की समाधि इत्यादि के दर्शन करते हुए बाबा अहमदाबाद पहुंच गए। यहां वह सूफी संत सुहाग शाह बाबा की दरगाह पर कुछ दिन रहे। बाबा अहमदाबाद से भगवान कृष्ण की नगरी द्वारिका जा पहुंचे। यहीं उन्होंने तय किया कि शिर्डी में वे अपने निवास का नाम 'द्वारिका माई' रखेंगे। द्वारिका से बाबा प्रभास क्षेत्र गए जहां भगवान कृष्ण ने अपनी देह छोड़ी थी।

अब बाबा ने निश्चय कर लिया कि उनका शिर्डी में प्रवास करने का समय आ गया है, अतः वह वापस शिर्डी चल दिए। राह में शिर्डी के पास के ही एक गांव में कुछ समय के लिए वह चाँद पाटिल के घर रहे। उन्हीं दिनों चाँद पाटिल के एक निकट सम्बन्धी की बारात शिर्डी गाँव जा रही थी जिसके साथ बाबा भी गए। कहा जाता है कि चाँद पाटिल के सम्बन्धी की बारात जब शिर्डी गाँव पहुँची तो खंडोबा मंदिर के सामने ही बैल गाड़ियाँ खोल दी गईं और बारात के लोग वहीं उतरने लगे। वहीं एक श्रद्धालु व्यक्ति म्हालसापति ने तरुण फकीर के तेजस्वी व्यक्तित्व से अभिभूत होकर उन्हें

'साईं' कहकर सम्बोधित किया। धीर धीरे शिर्डी में सभी लोग उन्हें 'साईं बाबा' के नाम से ही पुकारने लगे। इस प्रकार वे 'साईं' नाम से प्रसिद्ध हो गये। विवाह संपन्न हो जाने के बाद बारात तो वापस लौट गयी परंतु बाबा नहीं लौटे। वह शिर्डी में ही एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में रहने लगे और जीवन पर्यन्त वहीं रहे।

साईं बाबा के शिर्डी निवास, उनके चमत्कार एवं रहन सहन की विस्तृत जानकारी श्री गोविंदराव रघुनाथ दाभोलकर द्वारा लिखित 'श्री साईं सच्चरित्र' पुस्तक से मिलती है। श्री दाभोलकर जी ने इस पुस्तक की रचना सन १९१० में साईं बाबा के जीवन काल से ही प्रारम्भ कर दी थी। सन १९१८ में उनके महासमाधी लेने के पश्चात इस पुस्तक का ‘शिर्डी साईं संस्थान’ द्वारा प्रकाशन किया गया।

साईं बाबा ने अपने जीवन में सूफी मत के अनुसार 'एकेश्वरवाद' के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उनका नारा था, ‘सब का मालिक एक ईश्वर ही है’। अंधविश्वासों के विरुद्ध कर्मकांड इत्यादि से दूर सभी के दुख, दर्द हरना उनके जीवन का क्रम था। समाज के सभी वर्गों, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई में भाईचारा स्थापित हो, यही उनका लक्ष्य रहा।

शिर्डी में साईं बाबा अपना अधिकतर समय हिन्दू संतों एवं मुस्लिम फ़क़ीरों के साथ ही बिताते थे। उन्होंने किसी के साथ कभी भी कोई व्यवहार धर्म के आधार पर नहीं किया। उन्होंने महासमाधी तक नाथ संप्रदाय के नियमों का भी पालन किया। हाथ में जल का कमंडल रखना, धूनी रमाना, हुक्का पीना, कान बिंधवाना, सिर पर चंदन लगाना और भिक्षा पर ही निर्भर रहना, ये सब नाथ पंथी सम्प्रदाय के संतों की निशानी हैं। साईं बाबा यह सब कर्मकांड करते थे, अतः यह उनका नाथपंथी सम्प्रदाय से लगाव होना प्रमाणित करता है। इसके साथ ही साईं बाबा सिर पर सदैव कफनी बांधते थे। यह सूफी संतों का प्रतीक है जो स्मरण दिलाता रहता है कि एक दिन हम सभी को ईश्वर के पास ही जाना है। वह जीवन भर एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में ही रहे। साईं बाबा पूजा, पाठ, ध्यान, प्राणायाम और योग पर ध्यान न दे, समाज सेवा, विशेषकर निर्धनों की मदद करना, जड़ी, बूटियों एवं भभूती से लोगों की निःशुल्क चिकित्सा करना एवं ईश्वर से प्रेम का ही प्रचार करते थे। भोजन करने से पहले वह नियम से ईश्वर की स्तुति भी पढ़ते थे। इस प्रकार वह संतों एवं धार्मिक ग्रंथों द्वारा निर्धारित सभी नियमों का भी पालन करते थे।

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री साईं की प्रेरणा से डॉ यतेंद्र शर्मा ने साईं माहात्मय - हिंदी काव्य ग्रन्थ की रचना की है। साधारणतः श्री साई सच्चरित्र पढ़ने/ सुनने में सात दिन तक का समय लग जाता है। आजकल के व्यस्त जीवन में प्राणी इतना समय नहीं निकाल पाता। इस काव्य का पठन/ श्रवण ३० मिनट के अंतर्गत किया जा सकता है, तथा प्रभु साईं की कृपा प्राप्त की जा सकती है। प्रभु साईं से सभी के लिए कुशल मंगल की प्रार्थना के साथ यह काव्य ग्रन्थ आपकी सेवा में उपस्थित है।